# मेहन्दी के गुण

तथा

# उपयोग

( १८

मूल्य ।।।)

देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाजार, देहली ६

# मेंहदी के गुण

तथा

# उसके उपयोग

जिसमें समस्त रोगों की चिकित्सा करना केवल
मेंहदी द्वारा ही बताई गई है।

लेखक :—
हकीम मौलवी मुहम्मद अब्दुल्ला साहब

सम्पादक :—
रामस्नेही दीक्षित

प्रथमावृत्ति १२०० सन् १९५४ मूल्य ॥=)

प्रकाशक :
देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाज़ार,
देहली-६ ।

सर्वाधिकार सुरक्षित हैं ।

मुद्रक : गयादत्त प्रेस,
बाग दीवार,
देहली ।

# भूमिका

मेंहदी एक ऐसी वस्तु है, जो कि न्यूनाधिक प्रत्येक अमीर व ग़रीब लोगों के घरों में आसानी से मिल सकती है। स्त्रियां हाथ की हथेलियों और पैरों का सौंदर्य बनाने के लिए प्रथम तो महीने में एक या दो बार अन्यथा विवाह शादी के सुअवसरों पर तो अवश्य लगाया करती हैं। यह केवल एक रस्म ही नहीं बल्कि यह स्त्रियों के लिए लाभप्रद भी है। इसमें वैद्यकीय गुण पाये जाते हैं। यद्यपि मेंहदी लगे हुए हाथों पर काम करने से छाले कम पड़ते हैं। चूँकि स्त्रियों को घर का काम काज स्वयं हाथों द्वारा ही करना पड़ता है अतः उनके लिए मेंहदी का लगाना लाभप्रद सिद्ध हुआ है। इसके अतिरिक्त मेंहदी का लगाना, दिल धड़कन, मासिक धर्म का अधिकांश आना तथा सम्भोग की अधिकता को रोकता है। इसी आधार पर वैद्यों तथा डाक्टरों ने मेंहदी लगाना स्त्रियों के लिए अत्यन्त आवश्यक बतलाया है। इस पुस्तक में अनेकों बहुमूल्य योग लिखे गये हैं जो कि मनुष्य मात्र के लिये अत्यन्त उपयोगी हैं। लेखक ने इस पुस्तक को बड़े ही अच्छे ढंग से लिखा है और इसके संपादन में अनेकों परिस्थितियों का सामना किया है। अतः पाठकों से विनम्र निवेदन है कि इस पुस्तक को पढ़ कर लाभ प्राप्त करें और हमारे परिश्रम को सफल बनाने का प्रयास करें।

निवेदक

# विषय-सूचि


| विषय | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| १. मेंहदी के गुण, प्रकृति तथा भेद | .... | ५ |
| **मेंहदी से तैयार होने वाली औषधियाँ** | | |
| २. मेंहदी का तेल, काम शक्ति गोलियां | ... | ७ |
| ३. सिर शूल | .... | ८ |
| ४. मिर्गी | .... | ११ |
| ५. नींद न आना, सिर का चकराना, गंज | | १२ |
| ६. नेत्र रोग, आँखों का दुखना, लाली, फुली | | १४ |
| ७. मुख, नासिका तथा कण्ठ रोग (छाले, नकसीर) | | १७ |
| ८. कण्ठमाला | .... | १६ |
| ९. यकृत | .... | २० |
| १०. पीलिया | .... | २१ |
| ११. तिल्ली, गुर्दा व मसाना रोग | .... | २३ |
| १२. पथरी | .... | २५ |
| १३. पेशाब रुक-रुक कर आना तथा सुजाक | | २६ |
| १४. रक्त विकार के रोग (दाद, दाग, कुष्ट, बिवाई, घाव) | | २७ |
| १५. फोड़ा, फुंसी, खुजली आदि | .... | ३३ |
| १६. आग से जलना, हाथ पैरों की जलन | .... | ३६ |
| १७. मेंहदी से तैयार होने वाली भस्में (पारद भस्म, कलई भस्म, अबरक भस्म, सोनामुखी भस्म)। | | ३७ |

# मेंहदी के गुण, प्रकृति तथा भेद

यह एक प्रसिद्ध पौदा है जिसके नाम से सभी परिचित हैं।

## लम्बाई

इसके पौदे की लम्बाई भारतवर्ष में लगभग ६ फुट तक पाई जाती है।

## तना

तीन फुट के लगभग होता है किन्तु इससे अधिक गहरा चला जाता है।

## फूल

सर्व प्रथम हरी हरी घुंडियां निकलती हैं जिसके आस पास छोटी २ लाल पत्तियाँ लगी हुई होती हैं किन्तु उनके खिलने पर सफेद पीलापन लिये हुए फूल हो जाता है। इसमें साल में दो बार फूल आते हैं एक तो बरसात के दिनों में दूसरे सर्दी के दिनों में।

## फल

काली मिर्च से बड़ा और गुच्छों की आकृति में लगता है। जिसमें से बीज निकलते हैं।

## पत्ते

प्रत्येक ऋतु में लगे रहते हैं। इन पर खिजां ( मौसम पतझड़ ) कभी नहीं होती है।

## प्रकृति

इसकी प्रकृति भिन्न भिन्न है। कोई कोई प्रथम श्रेणी में सर्द व खुश्क और कोई कोई द्वितीय श्रेणी में सर्द व खुश्क बताते हैं। किन्तु कई इसको गरम बतलाते हैं परन्तु इसमें गर्म की अपेक्षा सर्द का प्रभाव अधिक है। क्योंकि जब इसको शरीर पर लगाते हैं तो त्वचा पर शीतलता प्रतीत होती है। और इसको खाने की दिशा में सर्दी दूर होकर शरीर में गर्मी आ जाती है। इसी कारण से यह स्वास्थ के लिये हितकर है।

## नाम

इसका सर्व साधारण नाम मेंहदी है। अरबी में हिना तथा फ़ारसी में भी हिना कहते हैं।

# 'मेंहदी से तैयार होने वाली औषधियां'

## मेंहदी का तेल

योग—मेंहदी के आध सेर पत्ते लेकर पौने दो सेर पानी में उबालें जब आधा पानी शेष रह जावे तो उतार कर छान लें और फिर उसमें आध सेर तिलों का तेल मिलाकर पुनः आग पर रखकर औटायें यहाँ तक कि समस्त पानी जलकर केवल तेलमात्र ही शेष रह जावे। तेल तैयार है इसे किसी बोतल में भर कर सुरक्षित रखें।

## सेवन विधि तथा लाभ

संधि पीड़ा आदि पर मालिश करने से पीड़ा शीघ्र शान्त हो जाती है। खुजली के लिए लाभप्रद है। सूजन पर लेप करने से सूजन दूर हो जाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि यह अत्यन्त लाभप्रद वस्तु है।

## काम शक्ति पैदा करने की गोलियाँ

यह योग मेरे एक परम मित्र ने मुझे बतलाया था और उन्होंने इसकी अत्यन्त प्रशंसा की है। क्योंकि ऐसे योग बहुत कम मिलते हैं जो कि कामुक शक्ति उत्पन्न करते हों।

## योग

आवश्यकतानुसार मेंहदी के फूल लेकर पुराने गुण के शर्बत में पीस लें और एक मिल हो जाने पर दो-दो रत्ती की गोलियां बना लें और उनको सुन्दर बनाने के लिये ऊपर से चांदी या सोने के वर्क लपेट दें। मात्रा—१ गोली गुनगुने पानी या दूध के साथ सम्भोग के एक घंटा पूर्व सेवन किया करें किन्तु स्मरण रहे कि शाम के समय नमकीन भोजन नहीं करना चाहिए।

## सिर रोग

सिर रोग अनेक हैं परन्तु यहाँ पर उन्हीं रोगों का वर्णन किया गया है कि जिन रोगों में मेंहदी लाभप्रद सिद्ध हुई है।

## सिर शूल

जहां सिर के रोगों की कोई गणना नहीं की जाती है वहीं केवल सिर शूल भी इतने प्रकार के हैं कि उनकी गणना करना भी सिर दर्द से खाली नहीं है परन्तु यहाँ गर्मी के कारण सिर शूल पैदा होने के योग लिखे जाते हैं।

## गर्मी के कारण पैदा होने वाला सिर शूल

गर्म धूप में चलने फिरने या आग पर अधिक समय तक काम करने या गर्म वस्तुओं के अधिकांश खाने से यदि सिर में पीड़ा पैदा हो तो उसके लिए मेंहदी अत्यन्त लाभप्रद औषधि सिद्ध हुई है। इसके संबंध में नीचे कुछ योग प्रस्तुत किये जाते हैं।

### योग

मेंहदी के फूलों को सिरका में पीस कर मस्तक तथा तालू में लेप कर दें ईश्वर की कृपा से पीड़ा शीघ्र शान्त हो जायगी।

### सरल योग

ईश्वर न करे कि आप ऐसे स्थान में रह रहे हों कि जहाँ सिरका प्राप्त न हो सके तो आप सिरका के बजाय सादा पानी से ही मेंहदी के फूलों को लेप कर दें तो भी ईश्वर की कृपा से पूर्ण आराम हो जायगा। केवल अन्तर इतना ही पड़ेगा कि फ़ायदा कुछ देर में होगा।

### द्वितीय सरल योग

योग—यदि किसी समय मेंहदी के फूल न मिल

सकें तो फिर मेंहदी के हरे या शुष्क पत्ते लेकर खरल में डाल कर पीसें और पानी द्वारा लेप बनाकर लेप कर दें यह भी अत्यन्त लाभप्रद योग है।

## शीघ्र प्रभाव डालने वाली औषधि

मेंहदी के फूलों का सिर पीड़ा के निमित्त लाभप्रद होना तो यहां तक लिखा है कि इसके ताजा-ताजा फूलों का सूँघना भी गर्मी से सिर पीड़ा होने के लिये विशेष लाभप्रद है।

## सिर पीड़ा के लिए पीने वाली औषधि

योग—मेंहदी के फूल ४॥ माशा को पानी में पीस कर कपड़े में से छान कर उसमें मधु ७ माशा डाल कर पिलायें इसके कुछ दिनों के पीने से गर्मी से पैदा हुई सिर पीड़ा शीघ्र शान्त हो जाती है।

शीघ्र लाभ प्राप्त करने के लिये उपरोक्त विधि से लेप भी करें जिससे कि शीघ्र आराम हो जावे।

## मेंहदी का तेल

जिस मनुष्य के गर्मी के कारण से सिर में पीड़ा रहती हो तो उसको उचित है कि समस्त तेलों को छोड़ कर केवल मेंहदी का तेल लगाया करें इससे ईश्वर की

कृपा से सिर की जलन और पीड़ा शीघ्र शान्त हो जायगी। तेल की निर्माण विधि पहले लिखी जा चुकी है।

## सिर की जलन

किसी-किसी पुरुषों के सिर में जलन सदैव रहा करती है कि वह बेचारे सिर पर भारी टोपी या पगड़ी भी नहीं पहिन सकते। बहुधा ऐसे मनुष्यों के सिर के बीच के बाल भी गिर जाते हैं ऐसे पुरुषों को उचित है कि मेंहदी के फूल ४॥ माशा, कतीरा ३ माशा रात्रि के समय पानी में भिगो दें और प्रातःकाल मिश्री मिलाकर पिलावें कुछ दिनों के सेवन से अवश्य आराम हो जायगा।

## नोट

सिर की जलन के लिए अचूक औषधि है। यदि रत्न ज्योति की पहचान और सेवनविधि मालूम करनी हो तो "हिन्दोस्तान की जड़ी बूटियाँ" नामक पुस्तक को पढ़कर लाभ प्राप्त करें।

## मिर्गी

मिर्गी के लिये पारद भस्म जो कि मेंहदी से निर्माण की जाती है अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध हुई है। चूँकि इसके

बनाने की विधि और इसके सेवन विधि इस पुस्तक के अन्त में दी गई है वहां से पढ़ कर बना लें किन्तु पारद को साफ़ कर लेना आवश्यक है।

## नींद न आना

नींद ईश्वर ने हम लोगों को अपूर्व भेंट दी है कि जिसके लिए धन्यवाद देना हमारी बुद्धि से बाहर है। लेकिन इसकी इज्जत वही पुरुष कर सकते हैं जिसको यह अपूर्व वस्तु बहुत कम प्राप्त होती है। यहां एक ऐसी विधि लिखी जाती है जिससे बेख्वाबी के रोगी को भी सुख की निद्रा आने लग जाती है।

## योग

आवश्यकतानुसार मेंहदी के फूल लेकर तकिया में रुई के स्थान पर भर कर रोगी के सिरहाने रख दें इससे ईश्वर की कृपा से अति शीघ्र रोगी को सुखपूर्वक निद्रा आने लगती है।

## सिर का चकराना

चिरकाल तक ज्वर से पीड़ित रहने या सिर पर चोट लगने या किसी चक्कर खाने वाली वस्तु पर जमाये रखने या अकस्मात् मस्तिष्क पर गर्मी आ जाने

या सर्दी लगने के कारण से यह रोग हो जाता है। अतः इस रोग को निर्मूल करने का योग निम्नांकित प्रस्तुत किया जाता है। जो कि बड़ा ही उपयोगी है।

## योग

मेंहदी के बीज ७ माशा बारीक पीस कर मधु में मिलाकर रोगी को चटायें और फिर शीघ्र गेहूँ की रोटी खांड तथा घी मिलाकर खिलावें। गाय का घी होना चाहिए। इससे हर प्रकार का सिर का चकराना दूर हो जाता है।

## गन्ज

यह रोग अत्यन्त दुखदाई है क्योंकि बाल ईश्वर ने मनुष्य की सुन्दरता के लिये बनाये हैं। इस रोग को दूर करने के लिये हम अपनी कई पुस्तकों में अनेक योग लिखे जा चुके हैं। अब मेंहदी संबंधी कुछ योग यहां भी अंकित किये जाते हैं।

## मेंहदी का तेल

जिसकी निर्माण विधि पहले लिखी जा चुकी है इसको बनाकर प्रतिदिन सिर पर मालिश किया करें इस क्रिया से कुछ समय उपरान्त सिर पर बाल उग आते हैं।

## द्वितीय योग

आवश्यकतानुसार सरसों का तेल लेकर आग पर रखें और इसमें मेंहदी के हरे पत्ते डालकर जलाते रहें। जब आध पाव तेल में ४ तोला पत्ते जल जावें तो उस तेल को छान कर शीशी में सुरक्षित रख छोड़ें और इस तेल से सिर पर मालिश किया करें।

## तृतीय योग

आवश्यकतानुसार मेंहदी के पत्ते लेकर इन्द्रायण के पत्तों को पानी में पीस कर लेप करें इसके कुछ दिनों के लगाने से अवश्य आराम हो जाता है।

## नोट

प्रतिदिन प्रातःकाल नीम के पत्तों के पानी से धोकर नया लेप बनाकर लगाया करें।

## नेत्र रोग

नेत्रों के कई रोगों के लिए मेंहदी एक महौषधि सिद्ध हुई है। दुखती हुई आँखों के लिए तो आश्चर्यजनक योग रखती है।

## दुखती हुई आँखों के लिए आश्चर्यजनक योग

यदि साधारण की दृष्टि से यह एक तुच्छ वस्तु है परन्तु परीक्षा करने पर यह एक लाभप्रद वस्तु सिद्ध हुई है।

### योग

मेंहदी के हरे पत्ते लेकर खरल में डालकर पीसें और घोंटकर टिकिया बनालें और रोगी को आदेश करें कि रात्रि को सोते समय गुदा पर इस टिकिया को बाँधकर सो रहें इसके बाँधने से ईश्वर कृपा से पीड़ा टीस लालिमा आदि सब दूर हो जायगी। अनुभूत योग है।

## मेंहदी की गोलियाँ

जो कि दुखती हुई आँखों के अतिरिक्त धुन्ध, जाला और फूलों के लिए भी लाभप्रद है।

### योग

मेंहदी के हरे पत्ते का पानी आध सेर लेकर इसमें तीन माशा अफ़ीम स्वच्छ मिलाकर कढ़ाई में डालकर आग पर रखें। जब समस्त पानी जलकर कवाम सा गाढ़ा हो जावे तब लम्बी २ गोलियाँ बनालें और

आवश्यकता के समय सर्द पानी में घिस कर नेत्रों पर लगाया करें। दुखती हुई आँखों की अचूक दवा है इसके अतिरिक्त धुन्ध, जाला को भी लाभप्रद है।

## नेत्रों की लाली

कभी नेत्रों के दुखने से नेत्रों में लाली आ जाती है और वह किसी भी प्रकार दूर नहीं होती है इसके निवारणार्थ दो योग नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं जो कि अत्यन्त लाभप्रद हैं।

## सुनहरी लोशन

( जो कि आँखों की लालामी के लिए अनुपम औषधि है )

**योग**—मेंहदी १ तोला, जीरा १ तोला। इन दोनों को गुलाब के अर्क में रात्रि के समय भिगो कर रखें और प्रातःकाल छानकर इसको किसी स्वच्छ शीशी में डाल-कर इसमें १ माशा भुनी हुई फिटकरी बारीक पीसकर मिलालें और आवश्यकता के समय प्रति दिन २-२ बूँदें नेत्रों डाला करें। ईश्वर की कृपा से पूर्ण आराम हो जायगा।

## पीले रंग का सुरमा

उपरोक्त विधि से मेंहदी का पानी तैयार करके ३

माशा भुनी हुई फिटकड़ी खरल में डालकर पीसें और उसमें समस्त पानी खरल करके प्रविष्ट करदें। पीत वर्ण का सुरमा बन जायगा। इसमें से ३-३ सलाई प्रति दिन नेत्रों में डाला करें।

## आँख की फुली

उपरोक्त औषधि उस फुली के लिए जो नई पड़ी हो अत्यन्त लाभप्रद है। प्रति दिन ३-३ सलाई प्रातः तथा सायं नेत्रों में डाला करें।

# मुख नासिका तथा कण्ठ रोग

## मेंहदी के चमत्कार

मुख तथा नासिका रोगों में से जिन रोगों के लिए मेंहदी लाभप्रद सिद्ध हुई है उनका वर्णन नीचे किया जाता है।

## मुँह के छालों को निर्मूल करना

इसका मुख्य कारण आमाशय की खराबी का होना है। अतः इसकी सर्व प्रथम चिकित्सा तो यही है कि आमाशय को ठीक रखा जाय किन्तु कष्ट से शीघ्र मुक्ति पाने के लिए निम्नांकित योगों से काम लें।

## सुनहरी पानी

मेंहदी को मीठे कुये के पानी से भिगो कर रख दें और थोड़ी देर के पश्चात् उसको छानकर उस सुनहरी पानी से छाले वाले रोगी को कुल्ली करायें। ईश्वर की कृपा से शीघ्र लाभ प्राप्त होगा और बिलखता हुआ रोगी आराम प्राप्त करेगा।

## आवश्यक सूचना

यदि शीतकाल हो तो मेंहदी को बजाय पानी में भिगोने के आग पर उबाल लें और उसको उतार कर छान लें और गुनगुना रहने पर रोगी को कुल्लियाँ करावें। इस बात का ध्यान रखना वैद्य का काम है।

## नक्सीर फूटना

यदि नाक के द्वारा रक्त निकलने लगे तो उसे नक्सीर फूटना कहते हैं यदि कभी-कभी स्वयं फूट जाय या ज्वर में फूट जाय तो उसे बन्द नहीं करना चाहिए। हाँ यदि सीमा से अधिक मात्रा में निकलने लगे तो बन्द कर देना आवश्यक होता है। हम निम्नांकित नक्सीर बन्द करने का एक अत्यन्त सरल योग प्रस्तुत करते हैं। अतः आवश्यकता के समय बनाकर लाभ उठायें।

## रक्त बन्द करने का सरल योग

योग—मेंहदी, जौ का आटा, धनियाँ, मुल्तानी-मिट्टी, समस्त को समान मात्रा में लेकर बारीक पीसें और पानी मिलाकर लेप बनालें। आवश्यकता के समय मस्तक पर लेप करें तथा तालू पर भी लेप करें और ऊपर से मलमल का कपड़ा पानी से तर करके रखते रहें। पाँव के तलवों पर भी मेंहदी लगावें ईश्वर की कृपा से शीघ्र लाभ प्राप्त हो जायगा। रोग बढ़ जाने की अवस्था में कुछ दिनों तक निरंतर सेवन करना उचित है।

## कण्ठमाला

यह भयङ्कर रोग है कि जिससे लाखों प्राणी मृत्यु के मुख में चले जाते हैं। वैद्यों तथा हकीमों के मतानुसार कण्ठमाला और सिल रोग एक ही है क्योंकि उनके कृमि एक ही हैं। यह प्रति दिन सुनने में भी आया करता है कि कण्ठमाला के रोगी अन्त में सिल रोग में ग्रसित होकर परलोक गमन करते हैं। इसके अतिरिक्त यह बात भी मानी हुई है। जिस प्रकार सिल रोग को शीघ्र लाभ नहीं होता है उसी प्रकार कण्ठमाला का रोगी भी बड़ी कठिनाई से स्वस्थ्य होता है। अब हम निम्नांकित एक

ऐसी योग प्रस्तुत करते हैं जो कि मरहम सा है और जिसके कुछ समय के प्रयोग से रोग समूल नष्ट हो जाता है।

## कण्ठमाला के लिए अक्सीर मरहम

**योग**—मेंहदी, काली मिर्च, नीलाथोथा प्रत्येक १-१ तोला लेकर बारीक पीसें और इसको १० तोला नाप के मक्खन में मिलावें जो सौ बार पानी से धुला हुआ हो। बस अक्सीर मरहम तैयार है।

## सेवन विधि

किसी बारीक कपड़े पर लगाकर घाव पर चिपका दें। ईश्वर की कृपा से कुछ दिनों में अवश्य आराम हो जायगा किन्तु यह याद रहे कि यह औषधि ऐसे कण्ठमाला के लिए अक्सीर सिद्ध हुई है जो कि फूटकर घाव बन गये हों बिना फूटे हुए कण्ठमाला के लिये अभी अनुभव नहीं हुआ है। हाँ किन्ही पुरुषों का कथन है कि यदि ऐसे अवसर पर उस्तरे आदि से छीलकर घाव बना लिया जाय तो फिर भी लाभ पहुँचाता है।

## यकृत रोग

यकृत शरीर का प्रमुख अङ्ग है इसके रुग्ण हो जाने से मनुष्य को अनेक प्रकार के रोगों से ग्रसित होना

पड़ता है। चूँकि मेंहदी पाँडु रोग के लिये अनुपम औषधि है। अतः निम्नांकित पांडु रोग का ही वर्णन किया जाता है।

## पीलिया रोग

जब यकृत में गर्मी बढ़ जाती है तो उससे यह रोग उत्पन्न होता है इसकी पहचान यह है कि रोगी की आँखें पीली पड़ जाती हैं और नाखून भी बिल्कुल पीले हो जाते हैं इसके अतिरिक्त रोगी को पेशाब इतना पीला आता है कि यदि कोई श्वेत रंग का कपड़ा या रुई उसमें डाल दें तो वह पीला पड़ जाता है। उसके लिये मेंहदी अत्यन्त लाभप्रद वस्तु है।

## पीलिया के लिए अद्वितीय योग

योग—मेंहदी के पत्ते ५ माशा लेकर रात्रि को कोरे कूजे में रख पानी में भिगो दें और प्रातःकाल मल कर छान लें और रोगी को पिला दें। और ३ मिनट के उपरान्त लोह भस्म जो कि लाल रंग की बनी हो लेकर पान में १ रत्ती मात्रा रख कर खिला दें पान में कत्था चूना भी लगा हुआ होना चाहिये ईश्वर की कृपा से सप्ताह के सेवन से पुराना पीलिया रोग समूल नष्ट हो जायगा।

## नोट

लोह भस्म लाल रंग बनाने की अनेक विधियाँ हैं जिन में से एक, अर्क के गुण तथा उसके उपयोग तथा घी कवार आदि में अंकित की जा चुकीं हैं वहाँ से पढ़ लें।

## पीलिया का सरल टोटका

मेंहदी के पौदे की छाल लेकर छाया में सुखा कर बारीक पीस कर सुरक्षित रखें और आवश्यकता के समय ३ माशा सर्द पानी के साथ सेवन कराया करें ईश्वर की कृपा से एक सप्ताह के निरंतर सेवन से पूर्ण आराम हो जायगा।

## द्वितीय योग

यदि मेंहदी के हरे पत्ते प्राप्त हो सकें तो सात माशा लेकर कुचल लें और कोरे बर्तन में रात्रि के समय भिगो दें और प्रातःकाल मल छानकर मिश्री मिला कर पिलावें ईश्वर की कृपा से आराम हो जायगा।

## प्लीहा शोथ

यह वह बीमारी है जो कि मनुष्य के स्वास्थ्य को मटियामेट करके बिल्कुल बर्बाद कर देती है। रोगी भारी काम करने तथा चलने फिरने से विवश हो जाता है

इसके अक्सीर योग तो अनुभूत योग चिन्तामणि प्रथम तथा द्वितीय भाग में लिखे जा चुके हैं। यहाँ पर केवल एक चुटकुला लिखा जाता है जो कि प्लीहा शोथ के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

## तिल्ली की सूजन दूर करने के लिए

## सरल चूर्ण

योग—मेंहदी की छाल बारीक पीसी हुई ३ तोला, नौसादर १ तोला, दोनों को मिलाकर बारीक पीस कर सुरक्षित रखें।

### सेवन विधि

प्रातः तथा सायंकाल ३ माशा की मात्रा लेकर गर्म पानी के साथ दें ईश्वर कृपा से दो सप्ताह के सेवन से तिल्ली की सूजन जाती रहेगी, बिल्कुल सरल एवं लाभप्रद योग है।

# गुर्दा एवं मसाना रोग

## और

## मेंहदी के चमत्कार

गुर्दा तथा मसाना के असंख्य रोगों में से कुछ रोगों

के लिए मेंहदी वास्तव में अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध हुई है तथापि नीचे की पंक्तियों में प्रथम गुर्दा के लिए एक योग पेश करते हैं जो कि अत्यन्त लाभप्रद है।

## दर्द गुर्दा

गुर्दा का दर्द बड़ा ही कष्टदायक होता है इससे रोगी पानी से बिछुड़ी हुई मछली की भाँति तड़पने लगता है। इसकी पहचान के लिए दो बातों का याद रखना आवश्यक है १ पीठ की तरफ़ से टीस उठकर रानों की ओर को निकला करती है। २ पेशाब तंगी से आती है और टट्टी भी कष्ट से आती है। बस यह दो बातें दर्द गुर्दा की पहिचान हैं। नीचे इसके सम्बन्ध में एक सरल योग प्रस्तुत किया जाता है।

## दर्द गुर्दा के लिए चूर्ण

योग—मेंहदी के पत्ते ६ माशा लेकर आध सेर पानी में उबालें जब समस्त पानी जलकर तीन छटाँक पानी शेष रह जावे तो उतारकर कपड़े से छान लें और गुनगुना रहने पर रोगी को पिलाया करें। ईश्वर की कृपा से कुछ दिनों पर्यन्त पूर्ण लाभ हो जायगा।

# पथरी

यह एक ऐसा बुरा रोग है कि जिसकी चिकित्सा बड़े २ डाक्टर सिवाय आप्रेशन के और कुछ नहीं समझते हैं किन्तु आयुर्वेदिक चिकित्सा में ऐसे-ऐसे योग मिलते हैं जिनसे बिना आप्रेशन के ही पथरी टूट कर निकल जाती है तथापि हम इस किस्म के उत्तमोत्तम अनुभूत योग चिन्तामणि प्रथम तथा द्वितीय भाग में और मूली तथा गाजर के गुणों की पुस्तकों में अंकित कर चुके हैं। यहाँ केवल एक योग प्रस्तुत पुस्तक के सम्बन्ध में अङ्कित किया जाता है।

## पथरी को दूर करने वाला योग

योग—मेंहदी के पत्ते व लकड़ी ३ तोला रात्रि के समय पानी में भिगो कर प्रातःकाल इसका पानी निथार कर पृथक् रखें और पहले रोगी को जौ क्षार असली २ माशा लेकर मक्खन में लपेट कर खिलायें और ऊपर से उस पानी को पिलायें। ईश्वर की कृपा से कुछ दिनों के निरन्तर प्रयोग से पथरी मूत्राशय द्वारा रेत बनकर निकल जाती है।

## पेशाब रुक-रुक कर आना

यदि पेशाब रुक-रुक कर आता हो तो उसके लिए भी उपरोक्त योग अत्यन्त लाभप्रद है।

## पेशाब का बन्द हो जाना

**योग**—मेंहदी के ३ माशा पत्तों को पानी में पीस कर छान लें और इसमें कलमी शोरा मिलाकर बिना हिलाये ही पिला दें। ईश्वर की कृपा से पेशाब जारी हो जायेगा।

यदि सर्दी की ऋतु हो तो पानी को गुनगुना करके पिलावें।

## पथरी दूर करने के लिए द्वितीय योग

**योग**—मेंहदी की छाल को छाया में सुखा करके बारीक पीसें और प्रति दिन प्रातःकाल ३ माशा पानी के साथ खिलाया करें। ईश्वर कृपा से पूर्ण आराम हो जायगा।

## सुजाक

यद्यपि सुजाक ऐसा साधारण रोग नहीं है जो प्रत्येक

साधारण से साधारण उपचार से दूर हो जावे क्योंकि यह रोग बिगड़ जाता है तो फिर बड़े २ योग असफल हो जाते हैं किन्तु तो भी कई औषधियाँ ऐसी हैं जिनसे बहुत लाभ पहुँचता है। एक चुटकला इसके लिए नीचे लिखा जाता है।

## सुजाक का बिल्कुल सरल योग

योग—मेंहदी की छाल ३ माशा सादा पानी १० तोला में पीसकर और मिश्री से मीठा करके पिलादें निरन्तर दस दिन पिलावें और गर्म वस्तुओं से परहेज रखें ईश्वर कृपा से सुजाक को पूर्ण आराम हो जायगा।

# रक्त विकार के रोग

## और

## मेंहदी का चमत्कार

मनुष्य के जीवन का दारोमदार रक्त पर निर्भर है। जब रक्त दूषित हो जावे तो फिर स्वास्थ्य कहां? रक्त विकार से असंख्य रोग उत्पन्न हो जाते हैं यथा—फोड़ा, फुंसी, खुजली, दाद, चम्बल, कुष्ठ आदि रोग रक्त-विकार का ही दुष्परिणाम हैं।

बड़े २ वैद्यों का खयाल है कि बिगड़े हुए रक्त को शुद्ध करना न केवल कठिन बात है बल्कि इसके उपचार में समय भी अधिक लगता है। यद्यपि लिखा है कि एक बार किसी राजा ने एक वद्य को पूरे एक साल तक रखकर चिकित्सा कराया था उस समय के वैद्य केवल इतना जानते थे कि प्रथम तो केवल एक दो दिनों में या एक सप्ताह में तो अवश्य आराम हो जाय अन्यथा वैद्य को अनाड़ी होने का फितवा लगा कर नये हकीम की सेवायें प्राप्त कर ली जाती थीं। बस इसी "हकीमबाजी" में रोग को यथार्थ इलाज तो होता नहीं बल्कि अंदर जड़ें गाड़ता जाता है और फिर उसका ठीक होना कठिन हो जाता है परन्तु मेंहदी रक्त विकार के लिये अत्यन्त लाभप्रद है। इसको निरंतर प्रयोग करने से रक्त बिल्कुल शुद्ध हो जाता है। अतः इसकी प्रयोग विधि नीचे लिखते हैं। आवश्यकता के समय पर बनाकर लाभ उठावें।

लेकिन पहले कुछ उन रोगों का वर्णन किया जाता है कि जो रक्त विकार से भयंकर होते हैं तदुपरान्त दो तीन नुस्खे ऐसे रक्त विकार संबंधी अंकित किये जायँगे जो कि रक्त विकार के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं। आवश्यकता के समय बनाकर लाभ उठावें किन्तु रक्त

विकार में परहेज करना अत्यन्त आवश्यक है। जो रोगी किसी रक्त विकार में ग्रस्त होकर हानिकारक वस्तुओं से परहेज नहीं करता। वह अच्छी से अच्छी और अक्सीरी से अक्सीरी दवा सेवन करता हुआ भी स्वस्थ्य नहीं हो सकता है। वैद्यों का कथन है कि चिकित्सा से परहेज़ रखना सर्वोत्तम औषधि है।

## दाद

अंदरूनी तौर पर भी रक्त को शुद्ध करने के लिए मेंहदी का प्रयोग करायें और बाह्य रूप से मेंहदी के पत्तों को सिरका में खूब अच्छी तरह बारीक पीस कर दाद को खुजला कर ऊपर लेप किया करें। कुछ दिनों के सेवन से पूर्ण स्वास्थ्य लाभ हो जायगा।

## काले दाग पड़ना

कई पुरुषों के शरीर पर ऐसे काले चिन्ह पड़ जाते हैं मानों कि तवा की कालिमा लगी हुई है। साधारण तौर पर ऐसे चिन्ह को "लहसन" के नाम से सम्बोधित करते हैं। इनको दूर करने के लिए निम्नांकित योग प्रयोग में लायें इससे कुछ दिनों के सेवन से चिन्ह दूर हो जाता है।

## योग

साबुन और मेंहदी बराबर मात्रा में लेकर पानी में अत्यन्त बारीक पीस कर प्रतिदिन लेप किया करे। कुछ दिनों के निरंतर सेवन से चिन्हों का नाम व निशान भी नहीं रहता है।

## कुष्ठ रोग

यह एक अत्यन्त भयंकर रोग है जिसका आतंक प्रत्येक दिल पर छाया हुआ है हकीम लोगों के कथनानुसार इसका कोई इलाज आज तक सफल नहीं हुआ है मगर फिर भी वैद्यों ने इसके प्रतिकूल योग लिखे हैं जिनसे प्रायः लोग स्वस्थ हो जाते हैं। यहाँ पर नीचे एक ऐसा योग अंकित किया जाता हैं जो कि कुष्ठ रोग के लिए अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध हुआ है।

## कुष्ठ को आरम्भिक अवस्था में दूर करने का योग

योग—मेंहदी के पत्ते चार तोला रात्रि को डेढ़ पाव पानी में भिगो दें और प्रातः मल छान कर इसमें

इसमें ढाई तोला खाँड मिलाकर पिलाया करें और निरंतर एक माह तक पिलावें। आशा है कि एक माह के सेवन से पूर्ण आराम हो जायगा। ईश्वर न करे, इससे बिल्कुल लाभ न हो तो यह समझ लें कि अब इसकी चिकित्सा हो ही नहीं सकेगी।

## बिवाई

यह रोग प्रायः शीतकाल में हुआ करता है जिससे वजू के पश्चात् काफ़ी देर तक कष्ट उठाना पड़ता है इसके लिये मेंहदी के हरे पत्ते खूब अच्छी तरह बारीक पीस कर ऊपर लेप करें। ईश्वर की कृपा से दो तीन बार के लेप से पूर्ण आराम हो जायगा।

## छाले

यदि पैदल यात्रा करने से पैरों में और हाथों का काम करने से हाथों में छाले पड़ गये हों तो उनके लिए मेंहदी एक मात्र औषधि है। तथापि देश का बच्चा बच्चा इस वास्तविकता से परिचित है। यही कारण है कि इस पर लाखों पुरुष अमल करते हैं। विधि इस प्रकार है कि मेंहदी को खूब बारीक पीस कर वल्कि कपड़े में से छानकर पानी मिला कर रखें और दो घंटा

तक भिगो छोड़ें फिर हाथ या पाँव के तलवों पर लगावें और खुश्क होने के बाद पानी से धो डालें इससे छालों को लाभ हो जाता है।

## नाखून का घाव

किसी समय नाखून के कोने में घाव हो जाता है और वह किसी तरह ठीक होने में नहीं आता है उस समय निम्नाँकित योग अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध हुआ है।

**योग**—मेंहदी को खूब बारीक पीस कर बकरे की चरबी में मिलाकर मरहम तैयार करें और प्रति दिन दोनों समय उस पर लगाया करें। ईश्वर की कृपा से घाव शीघ्र दूर हो जायगा।

## घाव

**योग**—मेंहदी के पत्तों को बारीक पीसकर सुरक्षित रखें और घावों पर इसको लगाया करें इससे कुछ दिनों में घाव खुश्क हो जाते हैं और शीघ्र भर जाते हैं।

## सिर के घाव

यदि सिर में घाव हो गये हों या ऐसी फुंसियाँ हों

जो छूतदार होती हैं इसके लिये मेंहदी के पत्ते मेंहदी के तेल में पीसकर ऊपर लगाया करें। ईश्वर की कृपा से कुछ दिनों के लगाने से समस्त घाव और फुँसियाँ दूर होकर त्वचा साफ़ निकल आयेगी। सर्वोत्तम योग है।

# फोड़ा फुँसी, खुजली, दाद, चम्बल की चमत्कार औषधि

## रक्त शुद्ध करने वाला शर्बत

योग—मेंहदी के पत्ते १० तोला रात्रि के समय १। सेर पानी में भिगो दें और प्रातः उसका पानी निथार कर उसमें अर्द्ध भाग उत्तम खाँड़, ३ पाव पानी डालकर कलईदार देगची में डालकर पकावें जब चाशनी बन जावे तो उतार कर शीतल करके बोतल में बन्द करके सुरक्षित रखें और प्रति दिन प्रातःकाल ५ तोला सादा पानी में मिलाकर पिलाया करें।

### लाभ

कुछ दिनों के निरन्तर सेवन से रक्त शुद्ध हो जाता है और खुजली फोड़ा फुँसी आदि दूर हो जाते हैं।

## रक्त शुद्ध करने के लिए लाभदायक शर्बत

**योग**—मेंहदी के पत्ते ६ माशे से ९ माशे तक रात्रि के समय कोरे कूजे में भिगोयें। प्रातःकाल पानी को छानकर ३ तोला शुद्ध मधु मिलाकर पिलावें इसी तरह प्रति दिन पिलाया करें और इस सेवन को कम से कम १५ या २० दिन तक निरन्तर जारी रखें।

## परहेज

खटाई तथा गर्म वस्तुओं, गुड़ शकर आदि से परहेज करायें और अधिक मिर्च से परहेज रखें।

## भोजन

बेसनी रोटी घी में चूर्ण करके खाने को दिया करें और समस्त वस्तुओं से परहेज़ जारी रखा तो ईश्वर की कृपा से इस दवा से हर प्रकार की खून फ़िसाद दूर हो जायगी।

## विविध योग

अब हम निम्नाँकित उन रोगों का वर्णन करते हैं कि जिनका वर्णन किसी भी रोग के प्रकरण में

नहीं किया गया है। आवश्यकता के समय बना कर लाभ प्राप्त करें।

## चिल्कावाय

यह बहुत कष्टदायक रोग है जिससे रोगी अनेकों कष्ट उठाता है इसके लिए हम एक सरल याग प्रस्तुत करते हैं।

## योग

मेंहदी के हरे पत्तों को ५ तोला लेकर कूटकर टिकियाँ बनालें और उसे १ तोला मीठे तेल में जलाकर और छानकर रखें और उसमें से प्रति दिन मालिश किया करें अत्यन्त लाभप्रद है।

## संधिवान

इस रोग का रोगी बहुत कष्ट उठाता है रात्रि के समय विशेषकर अधिक कष्ट रहता है।

## योग

साबुन और मेंहदी के पत्ते समान मात्रा में लेकर बारीक पीसकर पानी द्वारा लेप सा तैयार करलें और जोड़ों के स्थानों पर लेप करें ईश्वर की कृपा से अति शीघ्र आराम हो जायगा। इस लेप के लगाने से गठिया

का कठिन से कठिन दौरा रुक जाता है और रोगी की जान कष्टों से मुक्ति हो जाती है। यदि साबुन न भी मिलाई जावे तो भी लाभप्रद है।

## आग से जलना

**योग**—मेंहद के पत्ते थोड़े से लेकर पानी में पीसें और जले हुए स्थान पर लेप करें ईश्वर की कृपा से पूर्ण आराम हो जायगा।

## द्वितीय योग

**योग**—मेंहदी के पत्तों को पानी में खूब औटाकर उसके पानी की धार जले हुए स्थान पर डालें इससे भी जले हुए को शान्ति मिल जाती है अत्यन्त लाभप्रद है।

## हाथों तथा पैरों की जलन

**योग**—मेंहदी के पत्तों को पानी में बारीक पीसकर लेप करें जलन को दूर करने के लिए अनुभूत योग है।

## ऊनी कपड़ों की कीटाणुओं से सुरक्षा

ऊनी और पशमीना के कपड़े बहुमूल्य होते हैं

परन्तु उनमें यह त्रुटि है कि बरसात के दिनों में कीड़ा लग जाता है अतः कीड़ों की सुरक्षा के लिए एक निम्नाँकित योग प्रस्तुत किया जा रहा है जो कि अत्यन्त लाभप्रद है।

## योग

मेंहदी के फूल थोड़े से लेकर कपड़ों की तह के अन्दर खरल दें। इसकी सुगन्धि से कपड़े में कीड़ा न लगेगा।

## मेंहदी से तैयार होने वाली भस्में

मेंहदी जहां अनेक बीमारियों के लिए महौषधि है वहीं इससे कुछ अत्यन्त चमत्कारी भस्में भी बनाई जाती हैं। निम्नांकित उनका वर्णन किया जाता है।

## पारद भस्म

पारद भस्म को समस्त संसार ढूंढ़ता फिरता है किन्तु इसके बनाने की यथार्थ विधियाँ बहुत कम दृष्टिगोचर हो रही हैं। नीचे हम एक अत्यन्त आश्चर्यजनक योग प्रस्तुत करते हैं जो सज्जन चाहें उसे बनाकर लाभ प्राप्त करें।

# निर्माण विधि

पहले कलई की दो कटोरियाँ बनायें उसमें मेंहदी बारीक पीसकर आधा भर दें और फिर एक तोला पारद डालकर शेष अर्द्ध भाग को मेंहदी से पूरित करदें तत्चश्चात् दोनों कटोरियों को आपस में जोड़ करके एक बड़े उपला में रखकर बन्द करके गढ़े में रखकर ३-४ सेर उपलों की आग दें। पारा खील हो जायगा और कलई कच्ची रह जायगी।

## कलई भस्म

यद्यपि कलई की भस्म दोनों रीतियों से बनाई जाती है किन्तु सच यह है कि जैसी मेंहदी से बनती है वैसी किसी वस्तु से नहीं बनती होगी। सरल विधि इस प्रकार है कि दो बड़े उपलों में गढ़ा खोदकर इसमें मेंहदी के पत्ते हाथों से मलकर उपले के गढ्ढे में रखें और कलई को चावल के दाने के बराबर काट-काट कर पृथक्-पृथक् रखदें और फिर इसी प्रकार मेंहदी के पत्तों की तह देते और उस पर कलई के टुकड़े चुनते जावें और अन्त में दूसरा गढ़े वाला उपला द्वितीय गढ़े में नीचे ऊपर ५ सेर उपले चुनकर निर्माण स्थान में आग दें और शीतल होने पर धान की खील की भाँति फूला हुआ भस्म चुन लें और

पीस छान लें और यदि कोई टुकड़ा कच्चा रह गया हो तो फेंक दें। मात्रा १ रत्ती मक्खन में रख कर खिलायें। प्रमेह, स्वप्नदोष तथा सुजाक के लिए अत्यन्त लाभप्रद है।

## अबरक भस्म

मेंहदी ५ तोला लेकर ३० तोला पानी में भिगो दें और समस्त रात्रि भीगने के पश्चात् छानकर उस पानी में ५ तोला कल्मी शोरा घोल करके रखदें और अबरक सफेद के पतले-पतले टुकड़ों को आग में गर्म करके उपरोक्त पानी में बुझायें। इसी प्रकार कुछ बार बुझा देने से उपरोक्त टुकड़ा कण-कण होना प्रारम्भ हो जायगा अब उसको खरल में डालकर पीसें और पीसने के समय मेंहदी वाला पानी ही मिलाते जावें यहाँ तक सम्पूर्ण पानी खुश्क हो जावे तत्पश्चात् अबरक का गोला सा बनाकर कूजे में बन्द करके दस-बारह सेर उपलों की आग दें ईश्वर की कृपा से सर्वोत्तम भस्म तैयार होगी।

## सेवन विधि

मात्रा १ रत्ती शर्बत बनफ़शा या सौंफ के अर्क के साथ दें।

## लाभ

पुराने पित्तों विशेषकर गर्मी के ज्वरों के लिए अत्यन्त लाभप्रद औषधि है।

## सोनामुखी भस्म

## जो कि बवासीर के लिए अचूक औषधि है।

**योग**—पाव भर मेंहदी को लेकर लुगदा बनावें और उसके मध्य में १ तोला सोना मुखी का टुकड़ा रख दें तदुपराँत उसे किसी कूजे में भली भांति कचरौटी करके ५ सेर उपलों की आग दें और शीतल होने के पश्चात् निकाल कर बारीक पीस लें और उसमें ५ तोला रसौत मिलाकर चने के दाने के बराबर गोलियाँ बनालें।

## सेवन विधि

मात्रा १ गोली लेकर मक्खन में लपेट कर खिलाया करें।

## लाभ

खूनी बवासीर के लिए अद्भुत वस्तु है। जो चाहे अनुभव करले।

* शुभम् *

# सन्यासियों की गुप्त बूटियाँ

## भारतीय देहाती जड़ी बूटियां प्रथम भाग

इस पुस्तक में असंख्य ऐसी जड़ी बूटियों के गुप्त भेद अंकित हैं जिनके बल पर सन्यासियों की धाक जमी है। वे बूटियां जो जंगलों सड़कों और गांवों में हर समय मिल सकती हैं, बड़े २ रोगों पर चमत्कारी प्रभाव दिखाती हैं किन्तु आप उनके गुणों से अपरिचित हैं। यह अद्वितीय पुस्तक यदि आपके घर होगी, तो घर की स्त्रियां भी बच्चों व पुरुषों के अनेक रोगों की तत्क्षण चिकित्सा कर सकती हैं। कान में लगा कर सर्प विष दूर करने, मधुमेह को समूल मिटाने, दुबले शरीर को मोटा करने, ७ दिन में नपुन्सकता दूर करने, आंख को पुत्र देने, और अंगुली लगाते ही ज्वर को उतारने वाली ऐसी बूटियां बताई गई हैं, जिनके चमत्कारी प्रभाव से लोग आपको धनवन्तरी का अवतार समझने लगेंगे। मूल्य केवल ५) रुपए डाक व्यय १) अलग।

---

## भारतीय देहाती जड़ी बूटियाँ द्वितीय भाग

जिन्होंने प्रथम भाग पढ़ा है, वे जानते हैं, कि भारत के विभिन्न प्रान्तों में उगने वाली अपूर्व बूटियों का हमने कितने परिश्रम से ज्ञान संग्रह किया है। किस प्रान्त में कौन २ बूटियां कहाँ २ पाई जाती हैं, उनके प्रान्तीय तथा वैद्यक नाम क्या हैं। और किन २ रोगों पर वे चमत्कारी लाभ दिखाती हैं, आदि। उदाहरणतया—उन्माद रोगी की नींद जानने वाली बूटी, घाव और कुचले अंग को ठीक करने वाली बटी हाथ लेकर बिच्छू पकड़ लो और वह डंक न मारे, लड़की के बजाय शतियां लड़का पैदा करने वाली बूटी, अन्धों को नेत्र ज्योति देने वाली क्षय व तिल्ली नाशक बूटियाँ, सन्तानदाता बटी, गर्भदाता, प्रदर, स्वप्नदोष रोकने की बूटी, सूखा रोग की ताबीज बूटी, पेट दर्द को ५ मिनट में शांत करने वाली बटी आदि। मूल्य ४॥) रुपए, डाक व्यय ॥≡)

**देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, देहली ६।**